

## आजारीपण (~ भानुदास)

पडू आजारी | मौज हीच वाटे भारी |

नकोच जाणे मग शाळेला,  
काम कुणी सांगेल न मजला,  
मऊ मऊ गादी निजावयाला,  
चैनच सारी | मौज हीच वाटे भारी |



मिळेल सांजा सावुदाणा,  
खडीसाखर, मनुका, वेदाणा,  
संत्री, साखर-लिवू आणा,  
जा वाजारी | मौज हीच वाटे भारी |

भवती भावंडांचा मेळा,  
दंगा थोडा जरी कुणी केला,  
मी कावुन सांगेन तयाला,  
जा वाहेरी | मौज हीच वाटे भारी |

कामे करतिल सारे माझी,  
झटतिल ठेवाया मज राजी,  
वसेल गोष्टी सांगत आजी,  
मज शेजारी | मौज हीच वाटे भारी |

असले आजारीपण गोड,  
असुनी कण्हती का जन मूढ?  
हे मजला उकलेना गूढ,  
म्हणुन विचारी | मौज हीच वाटे भारी |

१. कवीला आजारीपण का आवडते?

---

---

---

२. वाक्यात उपयोग करा: मौज, चैन, राजी, मूढ, गूढ, कावणे, झटणे, कण्हणे

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

---

३. आजारीपणावद्दल तुम्हाला काय वाटते हे कवितेच्या एका कडव्यात सांगा. "यमक" जुळवायला विसरू नका!

---

---

---

---